सेठजी का इलेक्शन

-अण्णा भाऊ साठे

हिंदी अनुवाद - उषा वैरागकर आठले

(अण्णा भाऊ साठे का यह एकांकी/लोकनाट्य संभवतः भारत की आज़ादी से पूर्व दिसंबर 1945 के केंद्रीय विधान सभा और राज्य परिषद के सदस्यों के चयन के लिए सम्पन्न आम चुनाव के दौरान लिखा गया है। इसमें एक स्थान पर जून 1945 में हुए शिमला सम्मेलन की असफलता का भी ज़िक्र मिलता है। किसतरह चुनाव में ज़मींदार, साहूकार, राजे-रजवाडे या पैसेवाले ही खड़े होकर जीतना चाहते थे और 'स्वराज्य' की अवधारणा को किस तरह बेमानी साबित करना चाहते थे, इस बात को अण्णा भाऊ साठे ने इस एकांकी में स्पष्ट रेखांकित किया है। यह एकांकी लाल बावटा कला पथक के द्वारा कम्युनिस्ट पार्टी के पक्ष में किसानों के बीच जन-चेतना फैलाने के लिए, उन्हें संगठित करने के लिए लिखा और खेला गया होगा। इसकी विषय-वस्तु यही संकेतित करती है। शहरी पात्रों के संवाद हिंदी में तथा ग्रामीण पात्रों के संवाद तथा गीत संबंधित क्षेत्र की लोकभाषा/बोली में बदले जा सकते हैं। - अनुवादक)

लावणी/लोकगीत

एक गाँव था रहिमतपुर। रहता था वहाँ एक साहूकार।
नाम था उसका मगरचंद गूजर। वो तो था बहुत धनवान।
उसके पास थी बहुत ज़मीन। सम्मान था उसका। करता था व्यापार।।1।।

उठाए थे उसने फायदे युद्ध के। बहती गंगा में मुनाफा कमा-कमा के।
खुलेआम कालाबाज़ारी करके। भूखे-कंगालों का खून चूस-चूस के।
गाँठ का पैसा खर्चा कर-कर के। कमाई जाए इज़्ज़त चुनाव लड़-लड़ के।।2।।

दृश्य एक

(स्थान : इलेक्शन बोर्ड का ऑफिस। बोर्ड के सदस्य गंभीर विचार में डूबे हुए बैठे हैं। एक सदस्य के हाथ में उम्मीदवारों के आवेदनों का पुलिंदा है।)

सदस्य एक : क्यों सखाराम जी, आज कितने आवेदन आए?

सखाराम : *(पुलिंदा दिखाते हुए)* ये देखिये, ढेर सारे आए हैं! कोई लिख रहा है, "मैं 1920 से कांग्रेस का काम कर रहा हूँ", तो दूसरा लिखता है, "मैंने कांग्रेस के लिए वकालत छोड़कर सात साल जेल में काटे हैं"; कोई चतुर सुजान लिखता

है कि, ''मैं दिन में सिर्फ छै घंटे सोता हूँ, शेष अठारह घंटे चरखे पर सूत कातता हूँ!'' - ये मूर्ख यह नहीं समझते कि, कांग्रेस में काम करना और कांग्रेस के टिकट पर विधान मंडल का चुनाव जीतना - इनके बीच कोई संबंध नहीं है!

सदस्य दो : छोड़िये इस बात को, ये बताइये कि आज के पुलिंदे में विचारणीय आवेदन भी कोई है या नहीं?

सखाराम : हाँ, वैसे एक आवेदन तो है...

सदस्य एक : किसका है?

सखाराम : पहचानिये! कम से कम पचास हजार रूपये चुनाव फंड में मिलेंगे! कौन हो सकता है? सोचिये!

सदस्य दो : अच्छा! पचास हजार? कौन हो सकता है...? मेरी बुद्धि तो काम नहीं कर रही है।

सखाराम : *(पुलिंदे में से एक आवेदन निकालकर सदस्य को थमाता है)* ये देखिये। सिफारिश करना हमारे हाथ में है। आगे ऊपर के बोर्ड को पास करना है ..., वैसे पास तो हो ही जाना चाहिए!

सदस्य तीन : *(आवेदन पढ़कर आश्चर्य से)* क्या? मगरचंद गूजर की आप सिफारिश करेंगे?

सखाराम : हाँ, तो क्या हुआ?

सदस्य चार : अरे जानते हैं न कि, 1942 के आंदोलन में यह मगरचंद कहाँ था? गाँव में शासकीय सेवकों ने इसके हाथों से गवर्नर को सम्मान-पत्र दिलवाया था। वॉर-फंड कमेटी का ये चेयरमैन था। कालाबाज़ारी में तो पूरे ज़िले में इसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता था। और अब इसकी सिफारिश करना मतलब ...

सखाराम : देखिए ऐसा है कि, स्वतंत्रता आंदोलन में तो सभी प्रकार के लोगों की आवश्यकता होती है - तार काटनेवाले, गाड़ियाँ पलटाने वाले, लड़ने वाले साहसी वीर... आदि आदि ...! मगर विधान मंडल में दाँव-पेंच जानने वाले लोग ही होने चाहिए। विधान मंडल की 'राजनीति' एकदम अलग चीज़ है!

सदस्य तीन : राजनीति? क्या मतलब? आपकी यह बात हमें तो अच्छी नहीं लग रही!

सखाराम : (जेब में से कागज निकालते हुए) ये सूचना आई है ऊपर के पार्लियामेंट्री बोर्ड से *(ज़ोर से पढ़ता है)* ''अपना घर-बार हो, इसी तरह के व्यक्तियों का चुनाव करें, ताकि इलेक्शन फंड पर बोझ न पड़े।''

सदस्य चार : मगऽ र

सखाराम : *(आदेशात्मक स्वर में)* अगर-मगर कुछ नहीं! हम हर प्रकार के लोग चाहते हैं! ये राजनीति है! मैंने जो तय कर लिया...वो कर लिया।

(मगरचंद गूजर का प्रवेश। सिर पर केसरिया पगड़ी तथा सफेद कोट पहने हुए है।)

सखाराम : *(उठकर उसका स्वागत करते हुए)* आइये, आइये, मगरचंद सेठ। सौ साल उमर है आपकी! हम आपके बारे में ही बात कर रहे थे!

मगरचंद : नमस्ते! नमस्ते! हमारा आवेदन तो मिल ही गया होगा न?

सखाराम : *(बाकी सदस्यों की ओर आँख दबाकर देखते हुए)* बिल्कुल मिल गया! न केवल मिल गया, बल्कि निर्णय भी हो गया! आप जैसे व्यक्ति को विधान मंडल में नहीं भेजेंगे तो किसे भेजेंगे? *(पुलिंदे में से एक आवेदन निकालकर दिखाता है)* इस हलवाहे सत्तू को? कहता है, 'हमने सन् 42 में तार काटे, जेल गए, डंडे खाए, हमारी ज़मीनें सरकार ने ज़ब्त कर लीं!' हमारा कहना है कि, ठीक है, आपको हम देशभक्त मानते हैं! मगर विधान मंडल का और इन बातों का क्या संबंध है?

मगरचंद : एकदम सच है! चुनावी बयार चल रही है! ...तो, मैं तैयारी में जुट जाऊँ? कहते हैं न, 'शुभस्य शीघ्रम!'

सदस्य एक : तैयारी की क्या ज़रूरत है? आज तो हमारे टिकट का मतलब ही है जीत पक्की! उसके अलावा हम लोग तो हैं ही!... मगर ... *(अंगूठे और तर्जनी से रूपये के लिए इशारा करते हुए)* चुनावी फंड...

मगरचंद : अरे ये भी कोई कहने की बात है? मुझे पूरा ध्यान है! *(जेब से नोटों के बंडल निकालते हुए)* फिलहाल इतना रखिये! देखिये, ये तो सार्वजनिक फंड के लिए है, बाक़ी बाद में देखा जाएगा! ठीक है न? इजाज़त दीजिए अब!

सखाराम : *(मगरचंद की पगड़ी की ओर इशारा करते हुए)* पर सेठजी, इसे ज़ऽ रा...

मगरचंद : हँ हँ हँ! वो तो इसलिए पहनी थी कि अगर आप इंकार करते तो यहीं से सीधे महासभा के कार्यालय जाना पड़ता... इसीलिए... *(पगड़ी निकालता है, भीतर गांधी टोपी पहनी हुई है)* अच्छा, नमस्ते! इसी तरह हमारा ध्यान रखिये! और फंड-वंड की बिल्कुल चिंता मत कीजिएगा!

(जाते-जाते गाना गाता है)

मुझे टिकट मिल गया, अब असेंबली मेंबर होऊँगा।।
आज तक था मैं काला काक। करता रहा काला बाजार।
साफ़ शफ्फाक़ सभ्य बगुला अब तो मैं कहलाऊँगा।। 1।।

शंभू-उमाधरा। शुभ्र-गंगाधरा
झुककर जयजयकार क्रांति का करूँगा।। 2।।

आपदा में अवसर भला। बहने लगी धवल गंगा।
डुबकी लगा-लगाकर उसमें पवित्र हो जाऊँगा।। 3।।

बजने लगा क्रांति का साज। मज़दूर-किसानों का राज।
मगर असली क्रांतिवीर तो मैं ही अब कहलाऊँगा।। 4।।

सदस्य तीन : *(मगरचंद के प्रस्थान के तुरंत बाद)* यह नंदी बैल अब विधान मंडल में जाकर क्या करेगा?

सखाराम : अरे, इसी तरह के नंदी बैलों की तो वहाँ ज़रूरत है! सभी ज्ञानी होंगे तो कैसे काम चलेगा?

सदस्य दो : *(सत्तू को आते हुए देखकर)* ये और कौन आ गया? नंदी बैल गया और चरवाहा आ गया!

सखाराम : अरे, यही तो है वो सत्तू! ज़रा सम्हलकर...

सत्तू : राम राम सखाराम जी, पहचाना?

सखाराम : *(भूलने का नाटक करते हुए)* हं..., कहीं देखा हुआ तो लग रहा है! सत्तू तो नहीं?

सत्तू : कहीं देखा हुआ...? येरवड़ा जेल में सन् 42 में आपके साथ ही तो था मैं भी! आप तो घरवाली की बीमारी के कारण पैरोल पर छूट गए थे मगर मैं तो आज़ादी मिलने तक वहीं रहा। हाँ, ये अलग बात है कि आप 'ए' क्लास में थे और मैं 'सी' क्लास में! इसलिए शायद नहीं पहचानेंगे! खैर, अब ये बताइये कि मेरे आवेदन का क्या हुआ?

सखाराम : अरे सत्तू! ऐसा है न कि, 'जेनू काम तेनू थाय, बिजा करे सो गोता खाय!' विधान मंडल में तेरे जैसा किसान आदमी जाकर क्या करेगा?

सत्तू : मतलब? क्या आप सफ़ेदपोश लोग हम किसानों के दुख-दर्द और समस्याओं को ज़्यादा समझ सकेंगे?

सदस्य एक : वो बात नहीं है! यह श्रम विभाग है! किसानों को खेती करनी चाहिए...

सत्तू : अच्छा! ... हम आंदोलन में डंडे खाएँ, जेल जाएँ और विधान मंडल में आप लोग बैठें? यही कहना चाहते हैं क्या?

सखाराम : अरे, तूने आंदोलन किया, जेल गया... ये सब ठीक है, मगर असेंबली में जाकर क्या हल चलाओगे तुम लोग? अरे बाबा, राजनीति को क्या तुम इतना सरल समझते हो? और अब तो क्रांति करनी है! मज़दूर-किसानों का राज स्थापित करना है!!

सत्तू : वाह वाह! क्या बात है! किसानों के बिना, उन्हें परे हटाकर आप लोग किसानों का राज लाएंगे?

सखाराम : अरे, तू तो वैसे भी जेल से छूटने के बाद किसान सभा में चला गया है न? हमें तो यही रिपोर्ट मिली है। तू लाल झंडे वाले कम्युनिस्टों से मिल गया है न!

सतू : सच है। हममें इतनी अकल नहीं है कि 'जिधर बम, उधर हम' करें! जहाँ किसानों के हित की बात हो रही हो, हम वहीं काम करेंगे। हम ठहरे छोटे-मोटे किसान! आप हैं हाथी जैसे बड़े नेता! आपके तो खाने के दाँत अलग हैं और दिखाने के अलग! चले हैं किसानों का राज बनाने!!

सखाराम : ऐ, किसके सामने बात कर रहा है तू? याद रखना, इस सखाराम से तू ज़बान लड़ा रहा है! तेरा नामोनिशान मिटा दूँगा! क्या समझता है तू अपने-आप को?

सतू : बहुत अच्छे से पहचान चुका हूँ आप लोगों को! एक ओर से अंग्रेज़ सरकार और दूसरी ओर से आप लोग! कर दीजिए किसानों का सत्यानाश! मगर हिम्मत है तो खुलेआम बोलिये न, 'मज़दूर-किसान राज' का मुखौटा क्यों लगा रहे हैं?

सखाराम : *(गुस्से से)* फौरन दफ़ा हो जाओ यहाँ से! *(उसे धक्के मारकर निकाल देता है)*

दृश्य दो

(सतू का घर। सतू की पत्नी तारा उसका इंतज़ार कर रही है। सतू का प्रवेश)

सतू : सब चोर हैं! कहते हैं क्रांति करेंगे! किसानों का राज लाएंगे!

तारा : अजी, तुम कल से कहाँ थे? जिले से किसान सभा के नेता आए थे। काफी देर इंतज़ार करते रहे! कह रहे थे कि तुमको किसान सभा की ओर से विधान मंडल के चुनाव में उम्मीदवार बनाना है!!

सतू : सच कह रही हो?

तारा : मैं झूठ क्यों बोलूँगी? तुमको तुरंत बुलाया है! किसान सभा के ऑफिस में तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं वे! रोटी खाओ और तुरंत जाओ!

सतू : रोटी आने के बाद खा लूँगा! *(जल्दी जल्दी चला जाता है)*

(मगरचंद के नौकर धोंडीबा का प्रवेश। उसके सिर पर गांधी टोपी है)

धोंडीबा : ताराक्का... ओ ताराबाई !

तारा : क्या है रे धोंड्या? क्यों आसमान सिर पर उठा रहा है? तुझे समय-काल का कोई ध्यान है या नहीं? *(उसके सिर पर गांधी टोपी देखकर)* हैं!! ये कब से हो गया? तू तो बड़ा नेता बन गया रे!

धोंडीबा : अरे समूचे घर का रंग ही बदल गया तो मुझ जैसे नाचीज़ का बदलना कौन सी बड़ी बात है? मालिक ने आज ही कहा, खादी की टोपी पहन, तो मैंने

पहन ली। ऐसा कौन सा पहाड़ टूट पड़ा?

तारा : कोई पहाड़-वहाड़ नहीं टूट पड़ा; मगर यह टोपी तो सच्चे देशभक्त ही पहनते हैं... तू या तेरे मालिक जैसे चोर नहीं।

धोंडीबा : एऽऽ ताराबाई, ऐसा मत कहो। हमारे मालिक को क्या समझती हो? अब वो असेम्बली में जाने वाले हैं।

तारा : तेरे मालिक का क्या भरोसा, वह तो किसी भी हद तक जा सकता है! वो तो गिरगिट है... पल पल रंग बदलने वाला! और तू भी वैसा ही है... रंग बदलने वाला गिरगिट!

धोंडीबा : गिरगिट!... बोल लो, जो चाहे बोल लो! मगर ताराबाई, मैं तुम्हारे ताने सुनने नहीं आया हूँ। अरे, सफेद टोपी पहन ही ली तो क्या बिगड़ गया? लगी कहने मुझे गिरगिट सिरगिट! सत्तू कहाँ है, ये बताओ पहले!

तारा : क्यों? गए हैं किसान सभा के ऑफिस में।

धोंडीबा : अच्छा, वो उधर किसान-मज़दूर कर रहा है और हमारा क़र्ज़ा नहीं चुका रहा!

तारा : कर्जा? काहे का? किसका?

धोंडीबा : किसका मतलब? हमारे मालिक का। क़र्ज़ा चुकाना छोड़कर लाल झंडा लेकर घूम रहा है नेतागिरी करते हुए!

तारा : ऐ ज़बान सम्हाल के! फिर से बोलेगा तो जीभ खींच लूँगी।

धोंडीबा : अच्छा! अब क्यों गुस्सा आ रहा है? हमारे मालिक को जो चाहे वो बोलेगी? लाल झंडे का नाम लेते ही कैसे बिल्ली की तरह काटने दौड़ती है?

तारा : लाल झंडे ने तेरा क्या बिगाड़ा है? दो जून की रोटी का काल बन रहा है! आदमी है या पाजामा?

धोंडाबा : क्या मैं आदमी नहीं हूँ?

तारा : मुझे क्या पता? तुझे किसान कहूँ तो तू साहूकार का आदमी कहलाता है; और महाजन कहती हूँ तो महाजन की हवेली में तेरी झाड़ू जैसी हालत है! अरे, पेट भरने के लिए तो आदमी काँटे भी ठूँस लेता है!

धोंडीबा : ऐऽऽ ताराक्का, खरी-खोटी मत सुनाओ मुझे। अब मेरी जमीन चली गई, तो इसका मतलब यह तो नहीं कि मैं फालतू हूँ ...!

तारा : मैं भी तो वही कह रही हूँ। जिसने तेरी जमीन लूट ली, उसी के दरवाज़े पर कुत्ता बनकर किसानों पर भौंक रहा है तू?

धोंडीबा : क्या मतलब? जिसका नमक खाता हूँ, उसका ईमान भी न बजाऊँ?

तारा : अरे किसका नमक खाता है? उस मगरचंद का? उसके बाप ने भी कभी हल देखा है क्या? तेरा वो मालिक जानता भी है कि नांगर में बैल कैसे जोता जाता है? *(धोंडीबा सोचने लगता है)* क्यों? अब मुँह में क्यों दही जम गया? बता न, खेत में काम कौन करता है? तू या तेरा मालिक?

धोंडीबा : ताराक्का, ये भी कोई बात हुई?

तारा : लाल झंडे को गाली देता है! किसान सभा को भला-बुरा कहता है! यही बात समझ में आती है तुझे?

(धोंडिबा कुछ सोचता है और तत्काल उल्टे पाँव लौट जाता है। तारा खुश हो कर घर के भीतर जाती है कि उसका निशाना सही लगा है।)

कटाव (तमाशा में एक प्रकार की धुन)

धोंडिबा के दिल को लगा ज़ोर का धक्का। उसका स्वाभिमान जाग गया। तारा का बोल तीर-सा लगा। मन में उसके विचार ये जागा। 'भूल गया मैं अपना दरजा। अपने पाँव पर कुल्हाड़ी पटकने लगा। चोर के दरवाज़े मत्था टेकने लगा। अपने भाईबंदों को घेरने लगा। साहूकार के घर का बन गया कुत्ता। छोड़ कर अपने पसीने का आटा। क्यों मैं करता दूसरों की चाकरी। अपने हाथों अपनी आबरू लुटवाई ।। 1।।

जिसने छिनी ज़मीन हमारी। कंगाली ला दी जीवन में मेरी। बना लिया है अपना गुलाम। लेता है वो चाहे जो काम। करता है जो लानत-मलामत। उसमें नहीं है भलमनसाहत। रोटी की खातिर करता अपमान। क्यों करूँ उसका सम्मान? तारा ने सही रास्ता दिखलाया। किसान ही है किसान का भाया। साहूकार को है अब सबक सिखाना। मन ही मन बनाने लगा वो योजना। आप भी आराम से बैठे रहिये। आगे क्या-क्या होता है, देखते रहिये ।। 2।।

दृश्य तीन

(मगरचंद का घर। मगरचंद खादी का नया कोट पहन रहा है।)

मगरचंद : धोंडीबा, अरे धोंडीबा! गधा कहीं का! कहाँ मर गया है! चुनाव का समय सिर पर आ गया है और यह हरामी कामचोरी कर रहा है! *(ज़ोर से पुकारता है)* धोंडी, ऐ धोंडिबा!!

धोंडीबा : जी भैया जी, आया!

मगरचंद : बेवक़ूफ़! कहाँ गायब हो गया था? कैसा आदमी है तू?

धोंडीबा : जी? कैसा आदमी हूँ?

मगरचंद : आदमी नहीं, गधा है तू...

धोंडीबा : क्या गधा? क्या मैं दुलत्ती झाड़ता हूँ?

मगरचंद : ज़बान चलाता है? गधा कहीं का...

धोंडीबा : फिर गधा कहा! मालिक, मेरा नाम धोंडीबा है! गाँव के लोग मुझे कुछ भी

कहते रहते हैं और अब आप भी...!

मगरचंद : क्या कहते हैं गाँव के लोग?

धोंडीबा : कोई गूजर का कुत्ता कहता है, तो कोई कुलबोरन कहता है! मैं न तो घर का रह गया हूँ न घाट का! फालतू बन गया हूँ!

मगरचंद : मूर्ख हैं वे! अकल के अंधे हैं...

धोंडीबा : मगर आप भी तो उन्हीं की तरह...

मगरचंद : क्या कहा?

धोंडीबा : कुछ भी कहते रहते हैं। गधा...घोड़ा...भालू... जो मुँह में आता है!

मगरचंद : तो क्या हुआ? तू हमारा नौकर है!

धोंडीबा : नौकर है तो क्या हुआ, मैं आदमी नहीं हूँ?

मगरचंद : *(नरमी से)* अरे वैसा नहीं है! देख, चुनाव सर पर आ गया है और तू कामचोरी कर रहा है!

धोंडीबा : सच कहूँ तो भैया जी, अपने से नहीं होगी अब ये नौकरी!

मगरचंद : मतलब? तू मेरी नौकरी छोड़ देगा?

धोंडीबा : तो क्या जान दे दूँ अपनी इस चुनाव में?

मगरचंद : अरे, क्या ऊटपटाँग बक रहा है? धोंडीबा, अरे तू हमारा पुराना नौकर है। तू इस तरह ऐन चुनाव की गहमागहमी में हमें छोड़ जाएगा? अरे, तू हमारे बाप-दादों के ज़माने से सबको पहचानता है, तबसे हमारी चाकरी कर रहा है। है या नहीं? बता।

धोंडीबा : बिल्कुल! सबको पहचानता हूँ मैं! मेरे जैसे, जिन-जिन किसानों की ज़मीनों पर आपने क़ब्ज़ा किया है और जो अब आपके मज़दूर बन गए हैं, उन सब भाई-बंधुओं को मैं नहीं जानूँगा तो और कौन जानेगा? तो क्या उन सब मज़दूरों को जा कर कहना होगा कि साहूकार को वोट दो?

मगरचंद : क्यों रे, आज तेरे सिर पर किसका भूत सवार हो गया है, जो मुझसे सवाल-जवाब कर रहा है?

धोंडीबा : कह दिया सो कह दिया। अब मैं न तो चुनाव में आपका पक्ष लूँगा और न ही आपकी नौकरी करूँगा! कब तक आपकी गालियाँ खाता रहूँ?

मगरचंद : *(आवाज़ में मिठास घोलकर)* अरे, यह क्या कह रहा है धोंडीबा? चल, अब आगे से बिल्कुल नहीं डाटूँगा तुझे, एकदम गाली नहीं दूँगा। ठीक है? मगर कम से कम चुनाव होने तक नौकरी मत छोड़!

धोंडीबा : आप अभी तो कह रहे हैं पर कल गुस्सा आते ही मेरे कुल-खानदान तक को गाली बकने लगेंगे। आप ठहरे व्यापारी, आपका क्या भरोसा?

मगरचंद : मैं कह तो रहा हूँ कि नहीं डाटूँगा! मगर तू भी नौकरी छोड़कर बीच में नहीं भागेगा, इसका क्या भरोसा?

धोंडीबा : अगर मैं चुनाव ख़त्म होने के पहले नौकरी छोड़कर भागता हूँ तो मेरे कान काट लेना। ठीक है? और अगर आप गुस्सा हुए तो फिर मैं भी आपके कान...

मगरचंद : *(बर्दाश्त न होकर)* गधे! तू मेरा कान...

धोंडीबा : देखिये, गुस्सा हो गए न! मैं जाता ही हूँ!

मगरचंद : *(तुरंत नरमी बरतते हुए, पुचकारते हुए)* अच्छा बाबा; मेरा कान काट लेना! ठीक है? चल अब, काम पर चलें!

(लावणी)

एक मालिक दूसरा नौकर। हुआ करार दोनों में।।
किया गुस्सा पहले ने। तो काम छोड़ेगा दूजा पल में।।
यह करार तोड़ेगा जो। कान कटवाएगा बदले में वो।।

मगरचंद : तो धोंडीबा, अब करना ये है कि, जाओ तुम हरेक गाँव में, जाकर हमारे सभी मज़दूरों और बाकी किसानों से मिलो। याद रखो कि इस बार किसी मज़दूर से क़र्ज़े-वर्ज़े की बात बिल्कुल मत करना!

धोंडीबा : मतलब? पूरा क़र्ज़ा माफ़?

मगरचंद : अरे, नहीं नहीं। वैसा नहीं। अपने को वोट मांगना है न? इसलिए ज़रा अहिस्ता अहिस्ता...! किसानों से कहना, 'अगर वे हमें चुनते हैं तो हम तुम्हारे फायदे के... तुम्हारे क़र्ज़े माफ़ करने जैसे कानून बनाएँगे।

धोंडीबा : तो फिर मालिक, आपके क़र्ज़े का क्या होगा? पूरा डूब जाएगा?

मगरचंद : वो बाद में देखा जाएगा। पहले तो हमें चुनकर आना है।

धोंडीबा : ठीक है। बोलिये, पहले कहाँ चलें?

मगरचंद : ऐसा करते हैं कि पहले अपने मज़दूरों के पास चलते हैं! पहले उनसे मिलते हैं, उसके बाद उनके रिश्तेदार... उनके रिश्तेदारों के रिश्तेदार...

धोंडीबा : उनके रिश्तेदारों के रिश्तेदारों के रिश्तेदार...! बापरे! ऐसा करेंगे तो पूरा हिंदुस्तान ही नापना पड़ेगा! भैया जी, ऐसा करते हैं, पहले आसपास के सब किसानों के नेताओं के पास चलते हैं। उनको बहुत मानते हैं सब किसान। उनकी भी तो ज़मीन है आपके पास। उनको बोलने से वोटों की बरसात हो जाएगी आप पर।

मगरचंद : अच्छा! पहले किसके पास चले?

धोंडीबा : पास की बस्ती के सत्तू के पास! जो पिछली बार आंदोलन में गया था और सरकार ने उसकी ज़मीन नीलाम कर दी थी और आपने खरीद ली थी... वही! दो-तीन साल पहले की ही तो बात है...!

मगरचंद : अच्छा! वो आंदोलनजीवी सत्तू! सन् 1942 में उसने तार काटे थे, वही न? ठीक है, चल उसी के पास! अपना ही मजदूर है! *(प्रस्थान)*

दृश्य चौथा

(सत्तू का घर। धोंडीबा और मगरचंद का प्रवेश।)

धोंडीबा : ताराक्का, ओ ताराबाई! ज़रा बाहर तो आओ!

तारा : (बाहर आकर) कौन धोंडू? तू फिर से आ गया? और साहूकार को भी साथ लाया है? क्या चाहिए?

धोंडीबा : क्या चाहिए? अरे वोट चाहिए।

तारा : अच्छा! वोट चाहिए? कोई वोट-ओट नहीं मिलेगा। इसी तरह खड़ा रहा तो पिछवाड़े पर झाड़ू पड़ेगा।

धोंडीबा : वोट मालिक को चाहिए, इसलिए झाड़ू भी उन्हें ही...!

मगरचंद : *(आँखें दिखाकर)* धोंडीबा!

धोंडीबा : अरे! गुस्सा हो गए मालिक?

मगरचंद : (याद आकर) नहीं... नहीं... मगर ...

(सत्तू का प्रवेश)

सत्तू : अरे! भैया जी! आप कैसे पधारे गरीब की झोंपड़ी में?

मगरचंद : सोचा, तुम्हारी खबर-बात ले आऊँ! क्या हालचाल है? बहुत दिनों से मुलाक़ात नहीं हुई...

धोंडीबा : हाँ, एक तीर में दो निशान! क़र्ज़ा-वसूली करनी है और वोटों को भी साधना है...!

सत्तू : कैसा वोट? किसका वोट?

धोंडीबा : कैसा वोट? अरे, मालिक खड़े हैं न चुनाव में? टोपी से पहचाना नहीं?

मगरचंद : *(गुस्सा काबू में रखकर सत्तू से)* ऐसा है न सत्तू बेटा, हम इस बार विधान मंडल का चुनाव लड़ रहे हैं न... मतलब... हमें चुनाव में टिकट दिया गया है। सोचा, तुम्हारे पास आने से किसानों के वोटों की चिंता नहीं होगी!

सत्तू : अच्छा, यह बात है! चलिए, तो बताइये, अगर आपको हम जितवा देते हैं तो आप किसानों के लिए क्या करेंगे?

मगरचंद : सही सवाल! अरे, क्या नहीं करूँगा किसानों के लिए, ये पूछो? किसानों में तो मेरी जान बसती है सत्तू! और क्या कहूँ? हम विधान मंडल में आकर

स्वराज्य की स्थापना करेंगे। पूरा राज्य ही किसानों का बना देंगे।

धोंडीबा : मतलब, किसान पसीना बहाते हुए राजा बनेगा और साहूकार बैठकर खाने वाली प्रजा बनेगा? है न मालिक?

मगरचंद : धोंडीबा!

धोंडीबा : *(जेब से चाकू निकालकर हाथ पर फिराते हुए)* गुस्सा हो गए मालिक?

मगरचंद : *(नरमी बरतते हुए)* अरे नहीं नहीं! हाँ, तो मैं क्या कह रहा था? सब कुछ करेंगे किसानों के लिए! हमारा बारह सूत्री चुनावी घोषणा-पत्र पढ़ा है न?

तारा : सोने की लंका किसने देखी है? चलिए, आप तो सिर्फ़ यही बता दीजिए कि हमारे गाँव के लिए आप क्या करेंगे?

मगरचंद : अरे ताराबाई! यह राजनीति है। इसमें औरतों को बीच में नहीं बोलना चाहिए।

तारा : क्यों? किसानों के क्या दुख-दर्द हैं, गाँव में क्या परेशानी है - क्या ये हम औरतों को नहीं पता होता?

धोंडीबा : कैसे पता होगा? मालकिन बाई तो चार-चार महीने बंगले से बाहर नहीं निकलतीं। गहनों और साड़ियों के ढेर में मगन रहती हैं। उनकी सेवा में चार नौकरानी, पाँच नौकर, एक ड्राइवर, दो कुत्ते...! इसलिए औरतें उनकी नजर में सब बेकार! उन्हें राजनीति की क्या समझ?

मगरचंद : *(क्रोध से)* धोंड्या, तू बीच में मत बोल! क्यों बकबक कर रहा है? *(धोंडीबा चाकू सहलाता है, मगरचंद गुस्से को पीते हुए)* तो ताराबाई! हमने सोच-समझकर गाँव के लिए बहुत कुछ करने की योजना बनाई है...

सत्तू : कौनसी योजना?

मगरचंद : *(लावणी गाते हुए)*

सड़कें सुधारूँ गाँव की। सीढ़ियाँ पक्की तालाब की।।
पुल बनाऊँ पत्थर का। जाल बिछाऊँ सड़कों का।।
मंदिर नया बनवाऊँगा। नहरें बहुत खुदवाऊँगा।।
एक बड़ी शाला खुलवाऊँ। हरेक बच्चे को साक्षर बनाऊँ।।
यात्रियों के लिए बनेगी धर्मशाला। विकास का बहने लगेगा नाला।।
अस्पताल भी अच्छा गाँव में होगा। हरेक आदमी तंदुरुस्त बनेगा।।

धोंडीबा : बाकी बीमारियाँ तो हट जाएँगी, मगर साहूकारी और ज़मींदारी की बीमारी का क्या? *(मगरचंद उसकी बात अनसुनी कर देता है)*

मगरचंद : *(सत्तू और तारा से)* बताओ, और क्या चाहिए? सड़कें, स्कूल, कुएँ, अस्पताल, मंदिर, धर्मशाला...

धोंडीबा : कांजी हाउस, जेलखाना, पुलिस चौकी...!

मगरचंद : तू एकदम चुप रह!

सत्तू : वाह! क्या फूल झर रहे हैं! आज तो राजा उदार हो गया है...

मगरचंद : इसके अलावा स्वराज्य की स्थापना; मज़दूर-किसानों का राज...!

सत्तू : वह सब तो सुन लिया! पर क्या काला बाज़ारियों की सम्पत्ति भी ज़ब्त करेंगे?

धोंडीबा : क्या मतलब? अरे अरे, हमारे मालिक को कंगाल करवाओगे क्या?

सत्तू : सब बड़े-बड़े ज़मींदारों और साहूकारों के दस्तावेज़ जलवाएँगे?

धोंडीबा : और मेरी ज़मीन वापस देंगे?

मगरचंद : (गुस्से से) क्या कहा?

धोंडीबा : (चाकू पर हाथ फेरते हुए) मालिक, नाराज़ हो गए?

मगरचंद : नाराज़ नहीं हुआ, मगर...! ठीक है सत्तू, तुम लोगों का क्या कहना है, ये बता दो।

सत्तू : बताऊँ? आपके चुनकर आने पर...

धोंडीबा : मतलब, आपको किसानों द्वारा चुने जाने पर...!

(लावणी का एक प्रकार - 'झगड़ा' गाते हुए)

सत्तू : नौकरशाही को। खत्म करने के लिए। देश को एक करोगे क्या?

मगरचंद : मुसलमानों की। स्व-निर्णय की। गलत ज़िद को मानेंगे क्या?

सत्तू : त्यागकर घर-बार। पक्का निश्चय करके। मैदान में उतरोगे क्या?

मगरचंद : स्वराज्य के लिए। संघर्ष करने के लिए। हम कभी पीछे हटे हैं क्या?

ऐसा क्यों पूछ रहे हो? अब तक का स्वतंत्रता-संग्राम हमने ही तो लड़ा है, और यह चुनाव उसी अंतिम संघर्ष की तैयारी है! देखो, 1942 का संघर्ष सिर्फ अपने बचाव का संघर्ष था। अब चुनकर आने के बाद अंतिम संघर्ष के लिए बिगुल फूँकने वाले हैं। हाँ, हाँ, देखते रहना।

सत्तू : मैं ज़मीनी सच्चाई को देख रहा हूँ। मगर आप सच-सच बताओ कि आपका संघर्ष शिमला में, वॉईसराय के बंगले पर होने वाला है या और किसी दूसरी जगह पर? संघर्ष जमींदार-पूंजीपति करेंगे या भूख से मरने वाले मजदूर-किसान करेंगे? सूरत देख लो संघर्ष करने वालों की! शिमला में एक जगह के लिए 'न मुझे, न तुझे, दे दे गोरे चोर को' कहकर समूचा मामला बिगाड़ दिया था... अब भी आप लोग विद्रोह करेंगे या फिर से समझौते की फाँसी

का फंदा लगाएँगे देश के गले में?

मगरचंद : अरे, ये राजनीति का मामला है। तुम किसान उसे नहीं समझोगे।

सत्तू : हाँ, सच है। इस तरह बकवास राजनीति तो पूंजीपति की कुर्सी पर बैठने से ही समझ में आती है! चलिए ठीक है, यह बता दो कि... *(गाते हुए)* किसानों के लिए... न्यायपूर्ण अधिकार। किसानों के लिए ... कानून पक्का। बनाओगे न?

मगरचंद : पचता है, वो खाओ। शोभा देता है, वो पहनो। बेकार की चीज़ें मत माँगो।

सत्तू : *(गाते हुए)* पेटभर पेट को। मिले रोटी खाने को। ज़मीन बाँटोगे क्या हरेक घर को?

मगरचंद : *(गाते हुए)* तुम्हारी ये बातचीत। तिरछी चाल है विपरीत। कोई कैसे मान ले?

सत्तू : *(गाते हुए)* क़र्ज़ की माफ़ी। साहूकार से ज़मीन की ज़ब्ती। कानून कड़ा लाओगे क्या?

मगरचंद : *(गाते हुए)* बेकार बात मत करो। कहीं ऐसा हुआ भी हो। सबूत इसका दोगे क्या? अरे, ऐसा कब कहाँ हुआ है? बेकार की माँग मत करो। कभी कोई ज़मीन बाँटता है क्या?

सत्तू : हाँ, बाँटी हैं!

मगरचंद : कहाँ?

सत्तू : रशिया में, बल्गेरिया में, पोलैंड में... जरा देखो दुनिया की ओर!

मगरचंद : अरे, हुआ होगा वहाँ! यहाँ कैसे और कौन करेगा?

तारा : किसान सभा का लाल झंडा!

मगरचंद : लाल झंडा क्या रशिया से ज़मीन लाकर बाँटने वाला है?

तारा : ऐसा क्यों करेगा? हमारे देश में ही आप जैसे लोगों के पास जो एक-एक हज़ार, दो-दो हज़ार एकड़ जमीन जो पड़ी है, उसे ही बाँटेंगे।

धोंडीबा : तो फिर मालिक, ऐसा करते हैं... कि आपकी एक हज़ार एकड़ ज़मीन सबको बाँट देते हैं और वोट ले लेते हैं!

मगरचंद : गधा कहीं का! अपने घर की ज़मीन बाँट दूँ?

धोंडीबा : तो क्या आसमान से टपकेगी जमीन? अजी, ज़मीन का मोह छोड़िए, वैसे भी आप किसानों का राज तो लाने ही वाले हैं न?

मगरचंद : अबे गधे, तुझे कहा न कि बीच में मत बोल! सत्तू देखो, हम किसानों का भला करने ही वाले हैं, इस बात पर संदेह मत करो।

सत्तू : अगर साहूकार पहले ही किसानों का भला करते तो क्या किसान पर भीख माँगने की नौबत आती?

धोंडीबा : गधे की लीद अगर गुड़ की होती, तो कुम्हार कीचड़ में हाथ नहीं सानता!

मगरचंद : (क्रोध से) गधे, कितनी बार कहा कि बीच में मत बोल। मुझे, अपने

मालिक को बेइज़्ज़त करता है?

धोंडीबा : गुस्सा हो गए मालिक?

मगरचंद : गुस्सा नहीं आएगा तो क्या होगा?

धोंडीबा : *(चाकू निकालकर)* तो दिखाइये, लाइये अपना कान!

मगरचंद : *(हाथों से अपने कान ढाँककर)* अरे सत्तू, मुझे बचाओ! नहीं चाहिए चुनाव, नहीं चाहिए वोट और नहीं चाहिए ये नौकर!!

(भाग जाता है। सब किसान मिलकर गाते हैं)

(गीतकार : अमर शेख)

किसान हम सब आए हैं लाल झंडे के तले।
बाधा कोई उठ खड़ी, तो एकता के पथ चले।।

....